

# पर्यावरण संरक्षण में जैविक कृषि की भूमिका (इंदौर जिले की देपालपुर तहसील के संदर्भ में) Role of Organic Agriculture in Environmental Protection (With Reference to Depalpur Tehsil of Indore District)

Paper Submission: 02/04/2021, Date of Acceptance: 16/04/2021, Date of Publication: 26/04/2021



**धर्मेन्द्र सिंह चौहान**

शोध छात्र,  
भूगोल विभाग,  
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय  
इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत



**विजया अग्रवाल**

प्रोफेसर,  
भूगोल विभाग,  
श्री अटल बिहारी वाजपेयी  
गवर्नमेंट आर्ट्स एंड कॉमर्स  
कॉलेज,  
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय  
इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

## सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में जैविक कृषि की उपयोगिता का पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान बताया गया। इस अध्ययन हेतु इंदौर जिले की देपालपुर तहसील के 10 ग्रामों को चुना गया तथा प्रत्येक ग्राम से 5 जैविक कृषि में संलग्न परिवारों से प्राथमिक आँकड़े एकत्रित किये गये।

शोधपत्र में जैविक कृषि क्षेत्र, जैविक रासायनिक कृषि का तुलनात्मक अध्ययन तथा पर्यावरण संरक्षण में जैविक कृषि की भूमिका का अध्ययन किया गया है। निष्कर्ष के तौर पर पाया गया कि जैविक कृषि का क्षेत्र बढ़ा, रासायनिक कृषि से प्राणघातक बिमारियाँ बढ़ी, जैविक कृषि से मृदा उर्वरता बढ़ी आदि है। इस प्रकार पर्यावरण संरक्षण हेतु जैविक कृषि आवश्यक है।

The research paper presented a significant contribution to the conservation of the usefulness of organic agriculture in the environment. For this study, 10 villages of Depalpur tehsil of Indore district were selected and primary data were collected from 5 villages from 5 villages engaged in organic farming from each village. In the research paper, the field of organic agriculture, comparative study of organic chemical agriculture and the role of organic agriculture in environmental protection have been studied. In conclusion, it was found that the area of organic agriculture increased, chemical agriculture increased fatal diseases, organic agriculture increased soil fertility, etc. In this way, organic agriculture is necessary for environmental protection.

**मुख्य शब्द** : जैविक खेती, पर्यावरण संरक्षण, खाद, कीटनाशक, उत्पादकता।

Organic Farming, Environmental Protection, Compost, Pesticides, Productivity.

## प्रस्तावना

हमारे देश की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में निवास करती है, और इसमें भी आधे से अधिक कृषि कार्य में संलग्न है। देश में कृषि मुख्य व्यवसाय है, किन्तु देश के सकल घरेलू उत्पाद में इसकी भागीदारी 20 प्रतिशत से भी कम है।

कृषि क्षेत्र में नई सदी की चुनौतियाँ पिछले दशकों से भिन्न है। ये चुनौतियाँ भूमि प्रदूषण, मिट्टी उर्वरता में कमी, पर्यावरण प्रदूषण, उत्पादित खाद्यान्नों से बिमारियाँ आदि हैं। ये समस्याएं कृषि में अत्यधिक रसायनों के प्रयोग के फलस्वरूप उत्पन्न हुई है। इन विभीषिकाओं से बचने हेतु कृषि वैज्ञानिकों ने जैविक कृषि पद्धति का मार्ग सुझाया है। जिससे न केवल उत्पादन वृद्धि होगी, बल्कि लम्बे समय तक भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रहेगी।

इस विधि में जहरीले रसायनों के उपयोग के बगैर, ग्राम आधारित संसाधनों का उपयोग किया जाता है। इससे उत्पादित सब्जियाँ एवं अनाज मानव स्वास्थ्य के लिये लाभकारी होती है। इस पद्धति में कृषि उत्पादन के विविध घटकों जल, जमीन, पशुधन एवं वायुमण्डल के हितों को ध्यान में रखा जाता है।

भारत सरकार भी जैविक पद्धति को अपनाने के लिये प्रचार-प्रसार कर रही है। मध्यप्रदेश में सर्वप्रथम 2001-2002 में जैविक खेती का आन्दोलन चलाकर प्रत्येक जिले के प्रत्येक विकासखण्ड के एक गांव में जैविक खेती प्रारम्भ की गई और इन गाँवों को "जैविक ग्राम" नाम दिया गया, इस प्रकार प्रथम वर्ष में कुल 313 गाँवों में जैविक खेती की शुरुआत हुई, वर्ष 2003-04 में 2-2 गाँव अर्थात् 1568 गाँव में जैविक खेती की गयी। वर्ष 2006-07 में पुनः प्रत्येक

विकासखण्ड के 5-5 ग्राम लिये गये। इस प्रकार प्रदेश के 3130 ग्रामों में जैविक खेती का कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

#### शोध समस्या का चयन

शोधार्थी कृषक परिवार से सम्बन्धित होकर जैविक कृषि से परिचित है। इसलिये देपालपुर तहसील के ग्रामों को शोध हेतु चयनित करना निश्चित ही एक अच्छा उदाहरण होगा। इन गांवों में जैविक कृषि में संलग्न परिवारों का अध्ययन कर इस कृषि द्वारा होने वाले लाभ एवं प्रभाव का मुल्यांकन किया गया।

अतः शोध कार्य हेतु इस समस्या का चुना जाना अतिआवश्यक था।

#### अध्ययन क्षेत्र का परिचय

देपालपुर तहसील की भौगोलिक स्थिति 22°85' उत्तरी अक्षांश तथा 75°55' पूर्वी देशान्तर के मध्य है। इस तहसील का क्षेत्रफल 102225 वर्ग कि.मी. तथा समुद्र सतह से ऊँचाई 1720 फीट है। तहसील का अधिकांश भाग उत्तर की ओर हल्के ढाल वाला है। प्रमुख नदियाँ चम्बल एवं गंभीर है, जो न्यूनाधिक रूप से दक्षिण से उत्तर की ओर समानांतर रूप से बहती है। सम्पूर्ण देपालपुर तहसील दक्षिण ट्रेप के अन्तर्गत आती है, जो 300 मी. से अधिक मोटी है। क्षेत्र की जलवायु मानसुनी किस्म की है। जो कि सुहावनी है तथा वर्षा ऋतु को छोड़कर शेष वर्ष शुष्क रहती है। यहाँ की औसत वर्षा 175 मि.मी. (38.39 इंच) है। तापमान औसतन 20° न्यूनतम से अधिकतम 40° होता है। यह अधिकतम तापमान ग्रीष्म ऋतु में होता है। देपालपुर तहसील उत्तर में उज्जैन जिले, दक्षिण-पश्चिम में धार जिले, दक्षिण पूर्व में महु तहसील से जुड़ा हुआ है। प्रशासनिक दृष्टि से क्षेत्र में तीन नगर पंचायत (गौतमपुरा, बेटमा, हातोद), 1 जनपद

पंचायत, 1 विकासखण्ड, 100 ग्राम पंचायतें तथा 175 आबाद ग्राम एवं एक विरान ग्राम सम्मिलित है।

देपालपुर तहसील की प्रमुख खरीफ की फसल सोयाबीन है। रबी की फसलों में गेहूँ एवं चना प्रमुख है। देपालपुर तहसील में कृषि के उन्नत तरीकों के साथ-साथ जैविक कृषि का प्रभाव भी निरन्तर बढ़ रहा है। कृषक धीरे-धीरे जान गये हैं, कि रासायनिक कृषि से तुरन्त एवं असरदार लाभ तो प्राप्त किया जा सकता है, किन्तु लम्बे समय तक भूमि की उर्वरता क्षमता को नहीं बनाये रखा जा सकता है। परंतु फिर भी जैविक कृषि का रकबा केवल 30 से 35 गांवों में देखा जा सकता है, जो जैविक खाद एवं जैविक दवाईयों के प्रयोग से आर्थिक लाभ के साथ-साथ उत्तम स्वास्थ्य वर्धक फसले एवं सब्जियाँ पैदा करने में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

#### अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन क्षेत्र में जैविक कृषि क्षेत्र का अध्ययन।
2. अध्ययन क्षेत्र में जैविक कृषि एवं रासायनिक कृषि का तुलनात्मक अध्ययन।
3. पर्यावरण संरक्षण में जैविक कृषि की भूमिका का अध्ययन।

#### शोध प्रविधि

इंदौर जिले की देपालपुर तहसील के 10 ग्रामों को अध्ययन हेतु चुना गया तथा प्रत्येक गांव से 5 कृषक परिवारों को चुना गया, जो जैविक कृषि में संलग्न है। इस प्रकार 50 कृषक परिवारों से प्राथमिक आँकड़े एकत्रित किये गये। यह संकलन साक्षात्कार, अनुसूची, समूह चर्चा के माध्यम से किया गया।

द्वितीयक आँकड़ों को कृषि विस्तार अधिकारी से लिया गया।

#### अध्ययन क्षेत्र का विवरण

A		B		C		D	
भूमि का प्रकार	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	सिंचाई साधन	संख्या	कृषकों का परिवार	संख्या	श्रेणीवार	संख्या
भौगोलिक क्षेत्रफल	1,02,223	कुएँ	703	कुल खातेदार	38797	सामान्य जाति कृषक	30350
कुल काश्त योग्य रकबा	87,308	तालाब	62	लघु कृषक	13655	अनुसूचित जाति	3676
खरीफ का रकबा	82,500	नहर	04	सीमांत कृषक	11279	अनुसूचित जनजाति	488
रबी का रकबा	77,865	नलकुप	35,392	बड़े कृषक	13863	—	—
दो फसली रकबा	77,800	विद्युत पंप	35,290	—	—	—	—
असिंचित क्षेत्र	2,000	डीजल पंप	1190	—	—	—	—
—	—	स्प्रिंकलर	3032	—	—	—	—
—	—	—	—	—	—	—	—

स्रोत - कार्यालय कृषि विस्तार अधिकारी, देपालपुर  
फसलवार क्षेत्राच्छादन हेक्टेयर में खरीफ/रबी

क्र.	फसल का नाम	लक्ष्य (हेक्टेयर में)	पूति (हेक्टेयर)
1	धान	—	—
2	मक्का	1000	900
3	ज्वार	50	04
4	उड़द	300	25

5	मूँग	400	50
6	अरहर	220	75
7	तिल	—	—
8	मूँगफली	30	25
9	सोयाबीन	78000	80100
10	कपास	25	—
11	गन्ना	—	2
12	सब्जियाँ	5000	4500
13	अन्य फसले	—	—
	<b>खरीफ योग</b>	<b>85025</b>	<b>85681</b>
1	गेहूँ	33000	49701
2	चना	26500	23182
3	मटर	350	283
4	सरसो	30	22
5	अलसी	—	05
6	मसुर	90	38
7	सब्जियाँ, आलु, लहसुन	5000	4630
8	गन्ना	—	2
	<b>रबी योग</b>	<b>64970</b>	<b>77863</b>

स्रोत – कार्यालय कृषि विस्तार अधिकारी, देपालपुर  
कृषकों के कुल कृषि भूमि में जैविक कृषि क्षेत्र का अध्ययन

विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
1 से 2 एकड़ भूमि में	25	50
2 से 4 एकड़ भूमि में	15	30
4 से 6 एकड़ भूमि में	05	10
6 एकड़ से अधिक भूमि में	05	10
योग	50	100

शोध अध्ययन क्षेत्र में जैविक कृषि क्षेत्र का अध्ययन करने पर यह पाया गया कि 50 प्रतिशत कृषक अपनी संपूर्ण भूमि में से 1 से 2 एकड़ भूमि में जैविक कृषि करते हैं। 30 प्रतिशत कृषक 2 से 4 एकड़ भूमि में, 10

प्रतिशत कृषक 4 से 6 एकड़ भूमि तथा 10 प्रतिशत कृषक अपनी कूल भूमि में से 6 एकड़ से अधिक में से जैविक कृषि करते हैं।

प्रति हेक्टेयर कृषि भूमि में जैविक कृषि एवं रासायनिक कृषि का तुलनात्मक अध्ययन –

विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
3 से 5 हजार	25	50
5 से 8 हजार	10	20
8 से 10 हजार	10	20
10 हजार से ज्यादा	05	10
योग	50	100

शोधार्थी द्वारा कृषक उत्तरदाताओं से जैविक तथा रासायनिक कृषि के प्रति हेक्टेयर उत्पादन लागत के बारे में पूछे जाने पर 50 प्रतिशत कृषकों ने 3 से 5 हजार प्रति हेक्टेयर, 20 प्रतिशत कृषकों ने 5-8 हजार, 20 प्रतिशत कृषकों ने 8 से 10 हजार तथा 10 प्रतिशत कृषकों ने 10 हजार से ज्यादा प्रति हेक्टेयर जैविक कृषि तथा रासायनिक कृषि की उत्पादन लागत में अंतर बताया है।

**पर्यावरण संरक्षण में जैविक की भूमिका का अध्ययन**

जैविक कृषि के द्वारा पर्यावरण के घटकों को नुकसान पहुँचाये बिना उत्तम उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है एवं कृषकों के घर पर उपलब्ध अपशिष्ट सामग्री को कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाता है। जैसे – गोबर, गोमूत्र, छाछ, गोबर, गैस, स्लरी, कूड़ा-करकट,

भूसा, फसल के डंठल, नीम के पत्ते, आँकड़े के पत्ते, लहसून का पेस्ट आदि। इन तत्वों से जैविक खाद एवं दवाईयाँ तैयार की जाती है। इनके खेती में उपयोग से न केवल पौष्टिक खाद्य सामग्री प्राप्त होती है, वरन् पर्यावरण को भी नुकसान नहीं होता है।

**जैविक कृषि में निम्न लाभ होते हैं**

1. मिट्टी की उर्वरा शक्ति लंबे समय तक बने रहना।
2. मिट्टी की उत्पादन क्षमता में वृद्धि होना।
3. जैविक कृषि से उत्पादित खाद्यान्नों का प्रभाव मानव स्वास्थ्य के अनुकूल होता है। बिमारियाँ दूर होती हैं।
4. जैविक कृषि से प्राकृतिक तत्वों का सही उपयोग होता है एवं भूमिगत जल शुद्ध रहता है।

5. जैविक कृषि से मृदा प्रदूषण, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण की रोकथाम में सहायता मिलती है।
6. जैविक उत्पादों का बाजारों में अधिक मूल्य मिलता है।
7. मृदा में जल स्थिरीकरण एवं सूक्ष्म तत्वों की संख्या में बढ़ोत्तरी होती है।

#### रासायनिक कृषि का पर्यावरण पर प्रभाव

पिछले 50 वर्षों में कृषि विस्तार, बांधों के निर्माण तथा अन्य विकास परियोजनाओं के कारण 5 मिलियन हेक्टेयर वन क्षेत्र नष्ट हो गया है। रियो डि जेनेरियो में 1992 में आयोजित पृथ्वी सम्मेलन के अनुसार भारत में प्रतिवर्ष 3 प्रतिशत वनों का क्षरण हो रहा है।

रासायनिक खेती से पर्यावरण को होने वाली हानि को शोधार्थी द्वारा निम्न प्रकार देखा गया है –

1. भूजल स्तर में कमी
2. भू-जल गुणवत्ता में कमी
3. सतही जल प्रदूषण
4. भू-क्षरण से उत्पादकता में कमी
5. भू-सुधार में अधिक लागत
6. वनों का विनाश

मध्यप्रदेश के कृषि संचालक रहे डॉ. जी.एस. कौषल के अनुसार मध्यप्रदेश में नाइट्रोजन वाले रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से मिट्टी के अंदर कैल्शियम तत्वों की भारी कमी हुई है। इससे मिट्टी में प्राकृतिक रूप से कैल्शियम के तत्व बनना बंद हो गये हैं क्योंकि उनकी बंधनकारी शक्ति कमजोर हो गई। इस तरह भूमि की गुणवत्ता पर बुरा असर पड़ा है और भूमि क्षरण का खतरा बढ़ गया है। मिट्टी में जैविक कार्बन तत्वों की 0.25 प्रतिशत कमी दर्ज की गयी है।

इससे दोहरा नुकसान हुआ – प्रथम मिट्टी के उपजाऊ उपरी हिस्से में सूक्ष्म जीवों का स्थिरीकरण होना बंद हो गया, द्वितीय नुकसान नाइट्रेट, फ्लोराइन, आर्सेनिक, कैल्शियम कार्बोनेट, बार्ड कार्बोनेट और जहरीले पदार्थ भू-जल में उतरकर पानी को प्रदूषित करने लगे हैं।

पर्यावरण के लिये कीटनाशक कितने घातक हैं, इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि इसके असर से पर्यावरण सफाईकर्मी गिद्ध लुप्त हो गये हैं क्योंकि कीटनाशक से मृत पशुओं का माँस जब गिद्ध खाते हैं, तो वे भी मर जाते हैं या इनके डीएनए उत्परिवर्तन से धीरे-धीरे प्रजनन क्षमता खत्म हो जाती है। पशुओं में कीटनाशकों का जमाव इन फसलों के खाने से होता है।

वर्ष 1984 में दिसंबर में भोपाल शहर में यूनियन कार्बाइड लिमिटेड कीटनाशक दवा के कारखाने से जो जहरीली गैस का रिसाव हुआ, उसने अनेक लोगों को काल कवलित कर दिया। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग सभी खाद्यान्नों में प्रतिबंधित कीटनाशकों के अवशेष पाये गये मुख्यतः सब्जी वर्ग सर्वाधिक आलू (68.5 पी.पी.एम), बैंगन (74.00), पत्तागोभी (61.8), प्याज (62.0), भिण्डी (78) में पाये गये।

कीटनाशकों के विष के कारण तीसरी दुनिया में होने वाली मौतों में से एक तिहाई मौते भारत में होती है।

#### साहित्यावलोकन

के. ए. यादव (2019), 21 वर्षीय डी. ओ. के. परीक्षण के परिणाम के अनुसार –

1978 से जैविक खेती अनुसंधान संस्थान एवं स्विस संघीय एग्रोइकोलॉजी एवं एग्रीकल्चर अनुसंधान स्टेशन दीर्घावधि सम्मिलित परीक्षण किया गया जिसे DOK परीक्षण के नाम से जाना जाता है। (डी-बायोडायनामिक, ओ-जैविक एवं के परम्परागत) डी. ओ. के दीर्घकालिक परीक्षण में जैविक, बायोडायनेमिक, परम्परागत तथा परंपरागत जैविक पद्धतियों (समन्वित) का वैज्ञानिक तरीके से परीक्षण लगाकर दीर्घावधि तक उनका तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। यह परीक्षण पूरे विष में अपने प्रकार का अनूठा प्रयोग है और कई अन्य परीक्षण में इसका सानी नहीं है। जिन फसलों पर परीक्षण किया गया उनमें प्रमुख हैं, आलू, दलहन, हरी खाद, गेहूँ, चारा फसलें, पन्ता गोभी, जौ, रिजका, चुकंदर, सोयाबीन तथा मक्का। इन परीक्षणों के मुख्य परिणामों का विवरण निम्नानुसार है—

#### उत्पादकता—

उत्पादन के मामले में बायोडायनेमिक वे जैविक प्रणाली पारंपरिक प्रणाली के समकक्ष या 1 से 5: तक कम उपजाऊ पाई गई परंतु समन्वित प्रणाली की तुलना में उनकी उत्पादन क्षमता लगभग 20: कम रही। समन्वित प्रणाली में पारंपरिक व जैविक दोनों प्रणालियों का पूरा समावेश था।

#### पोषक तत्व संतुलन—

नत्रजन संतुलन सभी प्रणालियों में नकारात्मक रहा, फास्फोरस तथा पोटॉष संतुलन पारंपरिक को छोड़कर अन्य तीन प्रणालियों में थोड़ा सा नकारात्मक रहा परंतु आश्चर्यजनक रूप से जैविक प्लांटों में इस कमी का लंबे समय तक भी फसलों की बढ़वार तथा उत्पादन क्षमता पर कोई प्रभाव नहीं दिखाई दिया और इन तत्वों की कमी के कोई लक्षण भी दिखाई नहीं दिये।

#### ऊर्जा की खपत—

जैविक प्रक्रिया में पारंपरिक के मुकाबले ऊर्जा की कम खपत हुई।

#### मिट्टी की उर्वरा शक्ति में सुधार—

जैविक खादों के प्रयोग से मिट्टी की सरंचना तथा उर्वरता में सुधार हुआ। जिन कृषि जोत में जैविक खादों का उपयोग हुआ उन जोतों की मिट्टी में कार्बन का अंश 15–20 प्रतिशत तक अधिक पाया गया। जैविक तथा बायोडायनामिक जोतों में केंचुओं तथा अन्य मित्र कीटों की मात्रा भी काफी अधिक पाई गई। समन्वित प्रक्रिया के मुकाबले जैविक जोतों में सूक्ष्म जीवाणु कार्बन अंश 20–40 प्रतिशत तक तथा पारंपरिक के मुकाबले जैविक प्लांटों में 60–80 प्रतिशत तक अधिक पाया गया। मृदा एन्जाइम गतिविधि भी जैविक मिट्टी में अन्य प्रक्रियाओं के मुकाबले अधिक पाई गई।

#### पँवार, हरिशंकर (2018–19)

खेती किसानों करना दिन प्रतिदिन मुश्किल होता जा रहा है, इसके पीछे वजह है खेती की लागत का लगातार बढ़ते जाना। बीते कुछ वर्षों में विभिन्न फसलों

पर रोगों एवं कीटों के आक्रमण में अप्रत्याशित बढ़ोत्तरी हुई है। इन्हें नियंत्रित करने के लिए किसान महँगे रसायन खरीदता है नतीजतन खेती की लागत बढ़ जाती है परंतु कीटों व फसल के रोगों पर परिणामकारी नियंत्रण नहीं हो पाता है। इन्हीं समस्याओं को देखते हुए अब किसानों ने स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों के जरिए खेती करने में दिलचस्पी दिखानी शुरू कर दी है। खेती में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सांसधनों का उपयोग सदियों से किया जाता रहा है। लेकिन आधुनिक खेती में रासायनिक उर्वरकों के बढ़ते इस्तेमाल के चलते ये परंपरागत तरीके समय के साथ विलुप्त हो गए।

अब बहुत से किसानों को खेती में रसायनों के उपयोग के गलत नतीजे समझ आ रहे हैं। ऐसे में वे तेजी से परंपरागत खेती की ओर उन्मुख हो रहे हैं। इस नई प्रणाली में कई तरह के पौधों से निकाले गए रस, आसव, गौमूत्र, गोबर, पंचगव्य, छाछ इत्यादि गाँव में पाई जाने वाली वस्तुओं से तैयार कीटनाशकों के उपयोग से किसानों ने फसलों के रोग एवं कीट नियंत्रण में अच्छे परिणाम हासिल किए हैं। किसान द्वारा प्राचीन ज्ञान एवं अनुभव के आधार पर तैयार जैव कीटनाशकों का इस्तेमाल कर खेती की लागत को कम करने की दिशा में कदम बढ़ाए हैं। मध्यप्रदेश एवं आंध्रप्रदेश के हजारों किसानों ने जैविक कृषि अपनी लागत घटाई है।

**कुरुक्षेत्र पत्रिका (2019)** : कृषि विषय से शिक्षा हासिल कर रहे टिगरिया गोगा के कपिल परमार ने बताया कि पिछले तीन साल से हमने खेतों में रासायनिक खाद का उपयोग लगभग बंद सा कर दिया है। लहसुन के पौधे पर कीट नियंत्रण के लिए गो-मूत्र, छाछ, नीम के तेल का स्प्रे कर रहे हैं। इससे जीव हत्या नहीं होती और कीट नियंत्रण भी हो रहा है।

शिप्रा क्षेत्र के किसान जैविक खेती के फायदों को देखते हुए अपने समूह का रजिस्ट्रेशन कराने पर विचार कर रहे हैं। इनका कहना है कि खेती को पूरी तरह से जैविक करने के बाद इसका रजिस्ट्रेशन करवाएंगे। पूरी तरह से संतुष्ट होने के बाद बकायदा उपज की लेबोरेटरी में जांच कराई जाएगी। अपना खुद का मार्केट स्थापित कर जैविक उपज भी बेचेगें। पंजाब में पैदावार को बढ़ाने के लिए एक समय तक बड़ी मात्रा में रासायनिक खाद, कीटनाशकों का उपयोग किया गया। इसका दुष्परिणाम भी देखने को मिला।

**अरूण, डी. के. (2019)** : आज जिस जैविक खेती की मांग पूरे विश्व में आ रही है, उस पर पहली वैज्ञानिक किताब "एन एग्रीकल्चर टेस्टामेंट" सर अलबर्ट हॉवर्ड ने लंदन लिखकर सन् 1980 में प्रकाशित की थी। सन् 1956 तक उसके 7 संस्करण निकले, लेकिन शायद सन् 1960 के आसपास सन् 1960 के आस-पास मैक्सिकन गेहूँ द्वारा भारत में प्रारंभ हुई तथाकथित हरित क्रांति और द्वितीय महायुद्ध के बचे हुए गोला बारूद से उपजे रासायनिक खेती के कोहरे में सर हॉवर्ड की किताब गुम हो गयी। उसके बाद सन् 1980 के आने तक जब हमारा ध्यान उस की विसंगतियाँ उजागर होने लगी तब हमारा ध्यान उस ओर गया है। सन् 1905 से 1934 तक पूरे 29 साल तक

सर अलबर्ट हॉवर्ड ने भारतीय पारंपरिक खेती की विद्वत्ता के दर्शन यहाँ खेतों में किए थे।

**चौहान, इंद्रेश (2020)** ने कुरुक्षेत्र पत्रिका में "बजट में ग्रामीण क्षेत्रों को सुविधा सम्पन्न बनाने का प्रयास", नामक लेख में कृषि हेतु बजट में उठाये कदमों के बारे बताया गया। जिसमें गाँवों में ई-क्रांति, शुद्ध पेयजल, सामुदायिक रेडियो, हथकरघा प्रोत्साहन, दीनदयाल ग्राम ज्योति योजना मॉडल, ग्रामीण स्वास्थ्य अनुसंधान केन्द्र, कृषि पंप सेट योजना वित्त मंत्री ने बजट में कहा कि एक लाख पम्पों को ऊर्जा प्रदान करने के लिए सौर ऊर्जा चालित कृषि पंप सेट तथा जल पम्पिंग केन्द्र योजना शुरू कर रहे हैं। इसके लिए 400 करोड़ रुपये आवंटित करने का प्रस्ताव रखता हूँ। नहरों के किनारे एक मेगावाट सौर पार्कों के विकास के लिए अतिरिक्त 100 करोड़ रुपये अलग से रखा गया है। पूरे देश में नवीनीकरणीय ऊर्जा कोरीडोर परियोजना को इस वित्त वर्ष में त्वरित किया गया।

### निष्कर्ष

उपरोक्त शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा निम्न निष्कर्ष निकाले गये –

1. अध्ययन क्षेत्र में जैविक कृषि का प्रसार 2007 से लेकर 2016 बढ़ा है अर्थात् जैविक कृषि क्षेत्र में वृद्धि दर्ज की गयी।
2. रासायनिक कृषि के प्रयोग से प्राण घातक कैंसर जैसी बिमारियाँ उत्पन्न हुई हैं। इनके दुष्प्रभाव को देखते हुए कृषकों का रुझान जैविक कृषि की तरफ अग्रसर हुआ है।
3. जैविक क्रांति में वृक्षारोपण, तालाब निर्माण, कुआ निर्माण, छोटे बांध निर्माण, नॉडेप निर्माण, भूमि सुधार आदि योजनाओं में शासन अनुदान अध्ययन क्षेत्र में देखने को मिला।
4. रासायनिक कीटनाशकों द्वारा उत्पन्न समस्याओं से मुक्ति पाने हेतु मध्यप्रदेश का बायो पेस्टिसाइड (जैविक कीटनाशकों) के इस्तेमाल पर जोर दे रहा है।
5. जैविक कृषि के प्रयोग से प्रकृति के संरक्षण जंतुओं की संख्या में बढ़ोतरी होती है, जैसे – कौआ, सर्प, मंडक, कछुआ, गोह, छिपकली, चूहा, बटेर, तीतर, मैना, चमगादड़, गौरैया, चील, मोर, गिद्ध, उल्लू, छछूंदर आदि जंतु कृषि को नुकसान पहुँचाने वाले जीवों का भक्षण करते हैं।

### संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अवस्थी, नरेन्द्र मोहन : "संसाधन और पर्यावरण" (2005), म. प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पेज नं. 1, 19
2. गुप्ता, जैनेन्द्र : "भारत का भूगोल" (2008), युनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, जयपुर, पेज नं. 75, 84
3. हुसैन, माजिद : "कृषि भूगोल" (2005), रावत पब्लिकेशन, जयपुर, पेज नं. 30, 32
4. खत्री, हरीश कुमार (2013) : "भारत का भूगोल", कैलाश पुस्तक सदन भोपाल, पेज नं. 54, 57, 112, 117
5. कुमार, प्रमीला : "कृषि भूगोल" (2005), म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पेज नं. 42-44
6. ओम प्रकाश : "मृदा संरक्षण के सिद्धांत" (2001), राम पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, पेज नं. 1-5